International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-07-2023, Accepted: 28-07-2023, Published: 14-08-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 39-41

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में विदेशी भाषाओं का प्रभाव

दिलंका रसांगी नानायाक्कार
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य के एक क्रन्तिकारी उपन्यासकार थे। उनके सन 1916 में रचित सेवासदन उपन्यास के कारण अब तक के हिन्दी कथा साहित्य की दिशा का परिवर्तन हुआ था। यानी कि उपन्यास साहित्य आदर्शवाद से यथार्थ की ओर उन्मुख हो गया। उस समय भारत अँगरेज़ साम्राज्य के अधीन थे। बारी बारी से भारत में कई साम्राज्ययों के आक्रमण होने से उनकी भाषा और संस्कृति का प्रभाव भी भारतीय साहित्य पर पड़ गया। फलस्वरूप प्रेमचंद के उपन्यासों में भी कई विदेशी भाषाओँ का प्रयोग देखने को मिलता है।

मूल शब्दः साम्राज्य, अंग्रेज़ीदां

भाषा जो है बहता दरिया के सामान है। जिस तरह उस दरिया के पानी में अनेक धाराएँ, स्रोतों, बरसाती नालों का पानी मिलता रहता है, उसी तरह भाषा में भी उसका लेखक जिस समाज में रहता है, उस समाज के जनप्रयुक्त विविध भाषाई रूप, उस समय के विशिष्ट परिस्थितियों को मिलता है। प्रेमचंद के समय पूरा भारतीय समाज अंग्रेजी साम्राज्य के अधीन थे। इससे पहले भी कई सम्रज्ययों के गुलाम होना पड़ा, जैसे मुग़ल साम्राज्य, फ़्रांसीसी आदि। अतः उनकी भाषा और संस्कृति भी भारतीय साहित्य और समाज में जुड़ गए।

तथ्य विश्लेषण

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य इतिहास का एक देदीप्यमान नक्षत्र थे। उनका जन्म सन 1880 में उत्तरप्रदेश के एक ज़िला वाराणसी के लमही गाँव में हुआ था। बचपन से ही उन्हें किताबें पढ़ने की रूचि थी। गाँव के स्कूल में अध्यापक की नौकरी करके बाद में उन्होंने दो वर्ष के लिए इलाहाबाद आकर अपना अध्यापन प्रशिक्षण प्राप्त किया था। बाद में 'जूनियर सर्टिफिकेट टीचर' का प्रमाण पत्र प्राप्त कर लिया। उसी कारण वे कानपुर में स्थानांतरित हो कर आ गये। सरकारी नौकरी प्राप्त होने के बाद वे उत्तर प्रदेश के कई कस्बों में रहे थे।

उस समय भारत अंग्रेजों के गुलाम थे। गुलामी के कारण समाज में भेद भाव बढ़ गए, अंग्रेजों के सामान्य जनता पर शोषण बढ़ने के कारण समाज को दरिद्रता ने निगली हुई थी, भारतीय किसान की स्थिति अतिशय दुखद होने लगे, उन्हें ज़मींदारों महाजनों के शोषण का शिकार बनना पड़ा। विधवा ही नहीं गाँव की सामान्य स्त्री की दशा भी कष्टप्रद थी। यह सब प्रेमचंद ने अपनी आँखों से देखा और महसूस किया। उन्होंने अंग्रेजों से आम जनता को मुक्ति दिलाने के लिए और भारतीय सोई हुई जनता को जगाने के लिए अपनी लेखनी द्वारा प्रहार करना प्रारम्भ किया। कहा जाता है कि आज़ादी की लड़ाई में हिन्दी भाषा क्रांतिकारियों के लिए बनी हथियार थी। अतः प्रेमचंद ने भी अपनी लेखनी भाषा को अपना हथियार बनाया।

बहुवर्गीय, बहु क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करके रचना का क्षेत्र विस्तृत करना एक साहित्यकार की कुशलता है। अतएव प्रेमचंद के उपन्यासों को पढ़ने से भी यह द्रष्टव्य होता है कि उन्होंने अपनी लेखनी भाषा में कई जगह विदेशी शब्दों का प्रयोग किया। मुंशी प्रेमचन्द, साहित्य और उनकी भाषा पर अपना मत प्रकट करते हुए कहते हैं; 'साहित्य उसी रचना को कहेंगे, जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गयी है, जिसकी भाषा प्रोढ़ और सुंदर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो।'[1] अतः उन्होंने अपनी लेखनी भाषा द्वारा समाज की सच्चाई को दिखने का भरसक प्रयास किया था।

पहले भारत में मुग़ल शासन का सत्ता था। मुग़लों के समय में देश के राज–काज ही नहीं हर काम में अरबी–फ़ारसी भाषा का प्रयोग किया गया था। उसी भाषाओँ के मेल से उर्दू का जन्म हुआ था। मुग़लों की उस उर्दू भाषा के शब्द और अंग्रेज़ों की अंग्रेजी शब्द, साहित्य भाषा में जुड़ जाना आम बात थी।

प्रेमचंद, मूलतः उर्दू के लेखक थे। अतः उनकी शुरुआत का लेखन उर्दू में ही लिखा गया था। लेकिन बाद में उनके उर्दू उपन्यास, हिन्दी में रूपांतरित हो गया था। हिन्दी से ज़्यादा उर्दू का ज्ञान प्रेमचंद में बहुत था। साहित्य भाषा को सहज एवं बोधगम्य बनाने के लिए उन्होंने अपने साहित्य लेखन में अधिकतर उर्दू, अरबी और फ़ारसी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया था। आचार्य हाज़री प्रसाद द्विवेदी ने भी इस बात का समर्थन किया है–

'भाषा में बंगला का अनुकरण केवल शब्दों और मुहावरों में नहीं, नामों और विचारों तक में किया जा रहा था। प्रेमचंद ने पहले–पहल इन काल्पनिक घरौदों को ठोकर मार कर तोड़ दिया। उन्होंने हिन्दी को हर प्रकार से हिन्दी किया। उन्होंने हिन्दी–उर्दू के भेद को कम कर दिया और भाषा में नई प्राण–शक्ति फूँक दी।'[2]

जब उस बात पर विचारकों का सवाल था कि वे उर्दू से हिंदी की ओर क्यों मुड़े, तब उन्होंने जवाब देते हुए कहा कि 'जिस तरह युरोप में प्रवेश पाने के लिए किसी रचना का अंग्रेज़ी या फ़्रेंच में आना आवश्यक है, उसी तरह भारत की जनता के सामने आने के लिए हिन्दी में लिखना आवश्यक हो गये।'[3] उनका हिन्दी में अनूदित पहला उपन्यास, 'सेवासदन' उनके उर्दू उपन्यास 'बाज़ार हुस्न' का ही रूपांतरण है। उस 'बाज़ार हुस्न' की रचना समाप्ति के सम्बन्ध में उन्होंने जो पत्र अपने मित्र श्री दयानारायण निगम को लिखा, उसको पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि उर्दू में उपन्यास को लिख लेने के बाद भी उनकी इच्छा होती थी कि उपन्यास हिंदी में प्रकाशित हो जाए।

प्रेमचंद के उपन्यासों में उर्दू, अरबी और फ़ारसी भाषाओँ का प्रयोग;

'गोदान' में इस तरह के उर्दू शब्द देख सकते हैं।–

नुस्ख़ा, तख्मीमा, 'बरदान' में– रकम, अफ़सोस, लिफ़ाफ़ा, कलम, निर्मला में– तरबमीना, मुक्त्खोर, खराब–कबाब, ज़बरन, मनुसुवा, ख़ाक, इलज़ाम, 'सेवासदन' में– पानदान खित, शामियाना, 'कायाकल्प' में– दाखिल बक्त, मज़हबी, सलाम, चिराग़, सख्त, 'मंगल सूत्र' में– जायदाद, हुकूमत, इज़्ज़त और खैरात अदि अरबी–फ़ारसी शब्द देखने को मिलते हैं।

प्रतिज्ञा उपन्यास में अरबी–फ़ारसी का प्रयोग इस प्रकार है;

दीननाथ– "जब आपकी ज़बान काबू में रहे,..."[4]

'दीनानाथ ने एक मिनट तक बाहर खड़े होकर उनका इंतज़ार किया।'[5]

अंग्रेज़ शासन के अधीन होने के कारण उस समय की साहित्यिक भाषा में अंग्रेजी शब्द भी जुड़ गये थे। वह इसलिए कि अंग्रेज़ों के अनुकरण में अंग्रेज़ी बोलने का रोग सिर्फ़ उनके अधिकारियों और नवशिक्षितों के वर्ग में ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं तथा उच्च और मध्यवर्ग के परिवारों में भी था। वास्तव में इस प्रकार अंग्रेज़ी शब्दों को मिलाके बोलना उस ज़माने की फैशन–सी हो गयी थी। प्रेमचंद के समय देश में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध संघर्ष चल रहा था, फिर भी लोगों में अंग्रेज़ी बोलने का मोह बढ़ता जा रहा था।

इसी परिस्थिति को उद्धृत करते हुए प्रेमचंद कहते हैं; "कौमी भाषा का स्थान अंग्रेज़ी ने ले लिया और उसी स्थान पर विराजमान है। अंग्रेज़ी राजनीति का, व्यापार का, साम्राज्यवाद का हमारे ऊपर जैसा आतंक है, उससे कहीं ज़्यादा अंग्रेज़ी भाषा का। अंग्रेज़ी राजनीति, व्यापार, साम्राज्यवाद से तो आप बगावत करते हैं, लेकिन अंग्रेज़ी भाषा को आप गुलामी के तौके की तरह गरदन में डाले हुए हैं। अंग्रेज़ी राज्य की तरह आप स्वराज्य चाहते हैं। उनके व्यापार की जगह अपना व्यापार चाहते हैं। लेकिन अंग्रेज़ी भाषा का सिक्का हमारे दिलों पर बैठ गया हैं।"[6]

इन्हीं बातों पर प्रेमचंद ने यह लक्षित किया है कि पुराने ज़माने में आर्य–अनार्य भेद भारत में देख सकते थे। इसी प्रकार आज के समय में जो अंग्रेज़ी भाषा बोलते हैं, अंग्रेज़ी रंग–ढंग से रहते हैं, जिनको अंग्रेज़ीदां कहते हैं, उनके और गैर अंग्रेज़ीदां के बीच भेद उत्पन्न हुआ है। प्रेमचंद की नज़र में अंग्रेज़ीदां को आर्य जैसा उत्तम तथा ग़ैर अंग्रेज़ीदां को अनार्य जैसा निम्न था। जिस प्रकार आर्यों की सेवा करना और उनकी भोग–विलास की वस्तु संपादित करना अनार्यों का कार्य था, उस प्रकार अंग्रेज़ों की सेवा करना और उनके भोग विलास की वस्तु संपादित करना अनपढ़ ग्रामीण लोगों द्वारा बलपूर्वक किया जाना अनिवार्य ठहराया गया।

देश की राष्ट्रभाषा को छोड़ विदेशी भाषा को अपनानेवाले इन्हीं अंग्रेज़ीदां से उपन्यासकार घृणा करते हैं। वे कहते हैं कि चीन के लोग चीन भाषा में, कोरिया के लोग कोरियन में, जापान के लोग जापानी में ही बात करते हैं, पर हिन्दुस्तान और श्रीलंका अदि देशों में अपनी मातृभाषा से ज़्यादा अंग्रेज़ी बोलने में ही लोग गर्व अनुभव करते हैं।

लोगों की इस मानसिक दशा पर प्रहार करते हुए प्रेमचंद कहते हैं; 'यह विदित है कि जब तक हमारी राष्ट्रभाषा का निर्माण न होगा, भारतीय राष्ट्र का निर्माण ख़्वाब और ख्याल है। जापानी, जापानी में अपने भावों को प्रकट करते हैं, चीनी, चीनी में, इरानी फ़ारसी में, लेकिन भारत की शिक्षित जनता अंग्रेज़ी पढ़ने और बोलने में अपना गौरव समझती हैं। कितने ही सज्जन तो यह कहने में संकोच नहीं करते कि हिन्दी लिखने या बोलने में उन्हें असुविधा होती है। यह सीधी–सीधी मानसिक दासता है।'[7]

यही नहीं लोगों में अंग्रेज़ी बोलने का गर्व अनुभव करना उपन्यासकार देश की पराधीनता का ही एक लक्षण मानते हैं। यही दशा अधिकतर उच्च और मध्य वर्गीय समाज में देख सकते हैं। इस विषय से सम्बंधित प्रसंग प्रेमचंद के उपन्यासों में अंतर्गत है। प्रेमचंद के उपन्यास गोदान में शहरी समाज, जिसमें मालती, मेहता अदि पात्र, रंगभूमि में सोफ़िया के माँ–बाप, विनय के माँ–बाप अदि पात्रों द्वारा उपन्यासकार यह दिखाना चाहते हैं कि उस समय के समाज वातावरण के साथ–साथ लोगों की मानसिकता भी पराधीनता की ओर अग्रसर हुई है।

29 दिसंबर सन् 1934 को दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा द्वारा संचालित किये गये कार्यक्रम में प्रेमचंद ने अंग्रेज़ी भाषा का प्रभुत्व और भारत वासियों की पराधीनता को रेखांकित करते हुए भाषण दिया था। उच्च शिक्षा प्राप्त सज्जनों के मन में अंग्रेज़ी भाषा के प्रति जो मोह है, वह प्रेमचंद पूर्णतः पराधीनता ही समझते हैं।

वे कहते हैं; "हमारी पराधीनता का सबसे अपमान जनक, सबसे व्यापक, सबसे कठोर अंग अंग्रेज़ी भाषा का प्रभुत्व है। कहीं भी वह इतने नंगे रूप में नज़र नहीं आती। सभ्य जीवन के हर एक विभाग में अंग्रेज़ी भाषा ही मानो हमारी छाती पर मूँग दल रही है। अगर आज इस प्रभुत्व को हम तोड़ सकें तो पराधीनता का आधा बोझ हमारी गर्दन से उतर जाएगा।"[8]

बड़े–बड़े कार्यालयों में, संस्थाओं में, अज के ज़माने में भी जिसको अंग्रेज़ी आती है, उसको प्रमुखता दी जाती है। इस प्रकार अंग्रेज़ी जानने वालों को सम्मान के रूप में देखना भारतीय समाज में ही नहीं श्रीलंकीय समाज में भी अक्सर देखने को मिलता है। प्रेमचंद इस बात पर टिप्पणी करते हुए कहता है–

'इसमें संदेह नहीं कि ये खद्दर पहनने लगे हैं, पर उनके मनोभावों में लेश मात्र भी संस्कृति नहीं आई। किसी कमेटी की बैठक में चले जाइए, आप खद्दरधारी महाशयों को फर्राटे से अंग्रेज़ी झाड़ते हुए पाएँगे। वह शब्द और वाक्य जो उन्होंने दैनिक–पत्रों या अंग्रेज़ी–पत्रों में पढ़े हैं, बाहर निकलने के लिए अकुलाते रहते हैं। और अवसर पाते ही फूट निकलते हैं। हँसी तो तब आती है जब यह हज़रत अंग्रेज़ी न जानने वाली महिलाओं के सामने अपने वाग्विलास से बाज़ नहीं आते। अंग्रेज़ी भाषा का यह जादू कब तक हमारे सिरों पर रहेगा? कब तक हम अंग्रेज़ी के गुलाम बने रहेंगे? इससे तो यही टपकता है कि राष्ट्रीयता अभी ह्रदय की गहराई तक नहीं पहूँचने पाई।'[9]

पाश्चात्य प्रभाव के कारण आम भाषा में अंग्रेज़ी शब्दों का अधिक मात्र में प्रयोग प्रेमचंद के उपन्यासों में पाये जाते हैं।

प्रेमचंद के उपन्यासों में अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग इस प्रकार हुआ है।

प्रेमा – बाइसिकिल, गुड–ईविनिंग, मिस्टर, स्पीच, रिपोर्ट, मिनट, कॉलेज, पब्लिक, सेक्रटरी, रीज़र्व, डबल, पेंसिल, डॉक्टर अदि शब्द,

सेवासदन– क्लार्क, जज, म्युनिसिपैलिटी, फैशन, अपील, चेयरमैन, कौंसिल, इंट्रोड्यूस अदि शब्द,

रंगभूमि – पोलिटिकल–फिलोसोफी, पेपर, एडिटर, सोसइटी, फैक्टरी, मिशन, आयरन, लिबरल, ओवरसियर, इन्स्पेक्टर, कमीशन, डेथ, सिविलियन, अदि शब्द,

प्रेमाश्रम–एजेंट, इनकम–टैक्स, इंडस्ट्री, इकोनोमिक्स, एसोसिएशन, कंपनी, कमीशन, जेलर, ट्रेन, सब–कमिटी, रिज़र्व अदि शब्द,

गबन – अगेंस्ट, आइडियल, कान्चेकेशन, चार्ज अदि शब्द उनके हर उपन्यास में देखा जा सकता है जो अंग्रेजी भाषा से लिये गए हैं।

प्रेमचंद ने जब शहरी समाज का चित्रण किया था, तब अंग्रेज़ी भाषा के शब्दों का अधिक प्रयोग किया था। क्योंकि शहर के शिक्षित लोग अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग जब करते हैं, तब उन शब्दों का शुद्ध एवं मानक उच्चारण ही करते हैं, जबकि ग्रामीण अनपढ़ लोग अंग्रेजों का अनुकरण करके अंग्रेज़ी शब्दों को बोलने जाते हैं तब अपने अज्ञान के कारण ग़लत उच्चारण ही उनसे होता है। दोनों उपन्यासकारों ने इस प्रकार गलत उच्चारण बोलने वालों को समाज में उपहास के पात्र ठहराये। इसके कुछ उदहारण निम्न प्रस्तुत है।

अंग्रेज़ी का सही उच्चारण

गोदान – 'खेल शुरू हुआ तो मिर्ज़ा ने मेहता से कहा– "आइए डॉक्टर साहब, एक गोई हमारा और आपका हो जाय"।

मिस मालती बोली– 'फ़िलोसफ़र का जोड़ फ़िलोसफ़र से ही हो सकता है।'[10]

कर्मभूमि–'सहसा मोटर रुकी और डिप्टी ने उतरकर सुखदा से कहा – 'देवीजी, जेल आ गया।..'[11]

शहरी पात्रों से अलग गाँव के अशिक्षित पात्र जब अंग्रेज़ी शब्दों का उच्चारण करते हैं, तब वे अंग्रेज़ी भाषा का सरलीकरण करके उसका गलत उच्चारण करते हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों में यह अंतर स्पष्ट परिलक्षित होता है। अशिक्षित ग्राम वालों के अंग्रेज़ी शब्दों का गलत उच्चारण इस प्रकार उनके उपन्यासों में दिखाया गया।

जैसे– अलबम Albama, इंजिम Ingima, कमेटी kameti, कलेक्टर kalecter, कतरिना katarina, डिगिरी digiri आदि।

शहर के उच्च वर्गीय समाज के कृतिम वातावरण की अपेक्षा ग्रामीण समाज के यथार्थ को दर्शाने में प्रेमचंद ने प्रयास किया था उनके उपन्यास प्रेमाश्रम, गोदान और रंगभूमि इसके प्रमाण हैं।

मिश्रित भाषा का प्रयोग–

प्रेमचंद के विशाल कथा साहित्य पर दृष्टिपात करने से यह गोचर होता है कि प्रेमचंद ने अपनी मातृभाषा के अलावा उर्दू–हिन्दी, फारसी–हिन्दी, हिन्दी–अंग्रेज़ी आदि भाषाओं का मिश्रित प्रयोग किया है। वास्तव में यह प्रयोग अपने कार्य की सुविधा के लिए सरकार तथा लोगों द्वारा अपनाया गया है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में प्रयुक्त मिश्रित भाषा–प्रयोग के शब्दों के लिए कुछ उदहारण इस प्रकार है।

फ़ारसी + हिंदी = बेसुरे, बेमानी, बेचौन, बेसुध, बेधड़क, बेजोड़

फ़ारसी + अंग्रेज़ी = ज़िला–मैजिस्ट्रेट

हिन्दी + फ़ारसी = चालबाज़ी, गिरहबाज़ी, धोखेबाज़, बैठकबाज़

हिन्दी + अंग्रेज़ी = कोचवान, महिला–क्लब, अफ़सरी (अफ़सर+ई)

अंग्रेज़ी + हिन्दी = रेलगाड़ी, कौंसिल–भवन, म्यूनिसिपल कर्मचारियों, डिपोवाला, बैंकघर,

अंग्रेज़ी + उर्दू = जेलखाना, मास्टर साहब, डिप्टी साहब, गवर्नर साहब

उर्दू + हिन्दी = नेकनाम, डाकगाड़ी

सन्दर्भ सूचि–

1. प्रेमचंद, साहित्य परिचय, पृष्ठ 121
2. प्रेमचंद, चिट्ठी पत्री, भाग–एक, पृष्ठ 651
3. वही, पृष्ठ 670
4. प्रेमचंद, प्रतिज्ञा, पृष्ठ 06
5. वही, पृष्ठ 07
6. साहित्य का उद्देश्य, पृष्ठ 101
7. विविध प्रसंग, भाग–3, पृष्ठ 195
8. साहित्य का उद्देश्य, पृष्ठ 101
9. विविध प्रसंग, भाग–3, पृष्ठ 194–195
10. प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ 111
11. प्रेमचंद, कर्मभूमि, पृष्ठ 169